

## Dayanand Saraswati

Dayanand Saraswati was born as Mool Shankara on February 12, 1824 at Tankara, Morvi in the state of Gujarat. He belonged to a wealthy family of Samavedi Brahmins. His father Karshanji Lalji Tiwari brought up his son under the strict Brahminical rules. To acquire true knowledge, Mool Shankara left his parental home at the age of nineteen and wandered in various parts of India in search of truly learned ascetics to master the theory and practice of Yoga. He became a Sannyasi at the age of 24 and was named as Dayanand Saraswati.

In the year 1860, he found his Guru, a remarkable Sanskrit scholar at Mathura, Swami Virjananda Saraswati who was visually handicapped but had a grand vision about the future of India. On completion of Dayanand's studies, Guru Virjananda took a promise from his disciple as 'Dakshina' that he would dedicate his life to remove ignorance from the society, work incessantly to spread true Vedic knowledge.

In the 17<sup>th</sup> and 18<sup>th</sup> century, Swami Dayanand Saraswati emerged as a torchbearer in the Indian society and raised his powerful voice among the masses - men and women, illiterate and educated, people living in the cities as well as in the rural areas. He worked in many spheres and in various facets of life but his contribution in the revival of Vedic tradition is the greatest.

He gave a clarion call, Back to the Vedas and enthused Hindu society. At such a time when Vedas were considered as ancient relics of our civilization and when western scholars had started misinterpreting them, Swami Dayanand made a serious attempt to discover the genius of Vedic tradition by adopting the ancient and original methodology for proper interpretation of the Vedas which had fallen into disuse and misuse, during the decadence period.

Long before the rise of Indian National Congress, Swami Dayanand Saraswati had built the foundation of a strong nationhood. It was Dayanand Saraswati who used the words like Swaraj and Swadeshi for the first time. Dayananda showed true patriotism that was far in advance of the times.

Sardar Patel described Dayananda Saraswati as a great revolutionary leader and maker of India's destiny. His contribution towards the ideas of one national language throughout the country, Swadeshi, Nationalism, establishment of Panchayats, upliftment of the downtrodden, national and social unity, profound sense of

patriotism and declaration of Swarajya was an unparalleled gift to the Nation.

Great Indian patriots like Bhagat Singh, Ram Prasad Bismil, Sukhdev, Lala Lajpat Rai, Shyamji Krishna Verma and a galaxy of other freedom fighters were closely associated with and influenced by the ideas of Dayanand Saraswati. Lala Lajpat Rai referred to Dayanand Saraswati as his "Dharma Pita" and Arya Samaj as his Mother. Sardar Arjun Singh, Grandfather of Bhagat Singh (who had a picture of Swamiji tattooed on his chest), at the time of Yagyopavit (holy thread) ceremony of Bhagat Singh & his brother Jagat Singh, vowed to dedicate both his grandchildren in the service of the Nation. The author of the popular patriotic poem "Sarfaroshi Ki Tamana", Ram Prasad Bismil who happily went to gallows, too was imbued with nationalistic views of Swamiji. The great nationalist, Shyamji Krishna Verma was a direct disciple of Dayanand Saraswati.

Mrs. Annie Besant an ardent supporter of Indian self-rule and founder of 'Indian Home Rule Movement' called Dayanand Saraswati as the first to raise the slogan, India for Indians. Mahatma Gandhi appreciated his unequivocal pronouncement against untouchability.

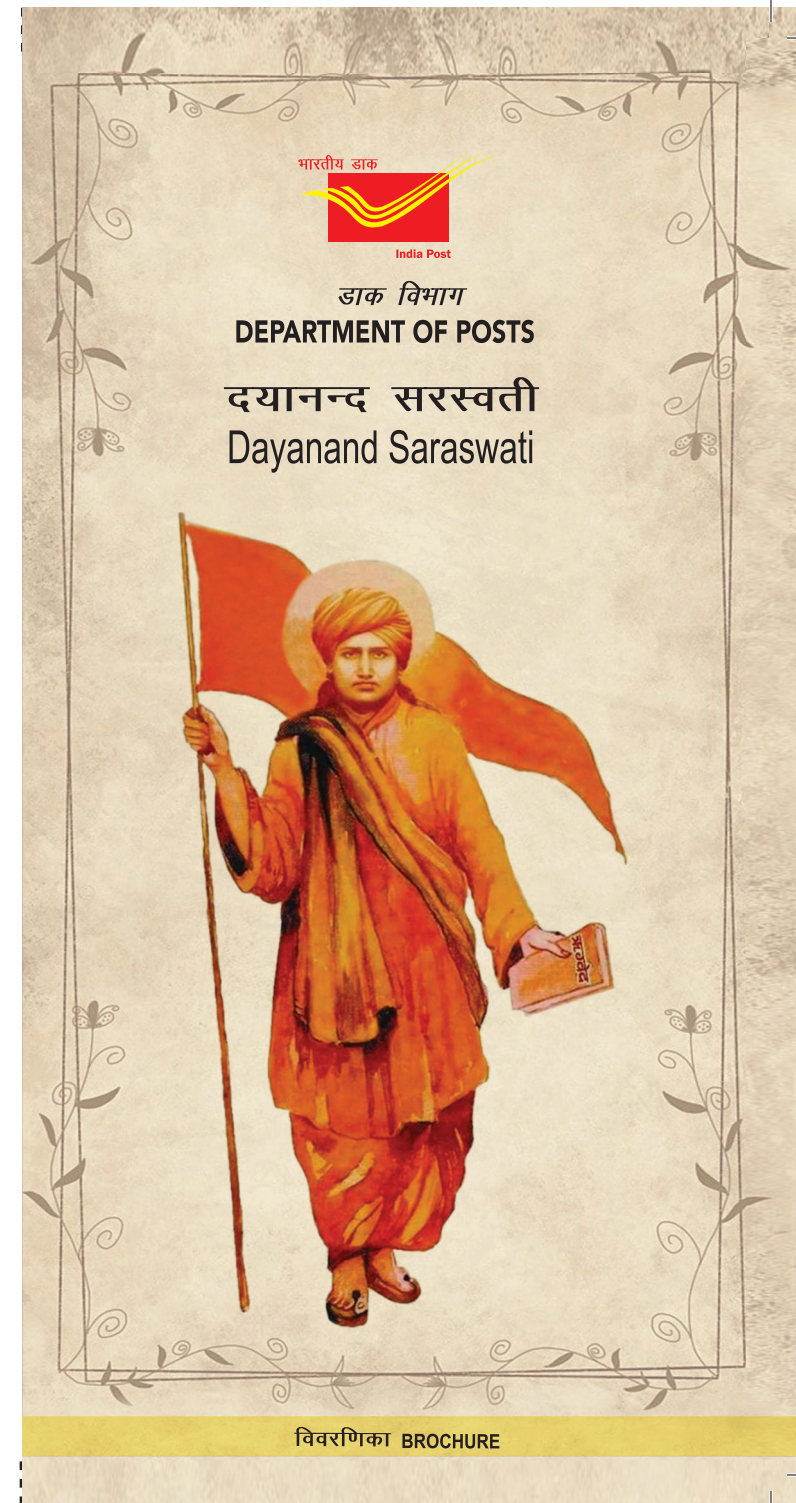
The Arya Samaj movement, while taking a cue from Swami Dayanand Saraswati's works, took up various programmes for the upliftment of depressed classes and established a number of Dalitoddhar Sabhas in the country.

Dayanand Saraswati was deeply concerned about deplorable condition of women in India. He delved deep into the Vedic studies and found that inferiority of the females was not at all sanctioned by the Vedas. He asserted that during Vedic times women enjoyed a very respectable position in the society. The orthodoxy opposed tooth and nail when Dayanand Saraswati started his crusade to preach.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Dayanand Saraswati and salutes the life and work of this great social and political reformer and a true patriot.

### Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Sh. Anuj Zood  
Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta  
Text : Referenced from content provided by Proponent



## दयानंद सरस्वती

दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, 1824 को गुजरात के टंकारा, मोरवी में हुआ। उनके माता-पिता ने उन्हें मूल शंकर का नाम दिया। वे, सामवेदी ब्राह्मणों के एक समृद्ध परिवार से थे। उनके पिता, करशनजी लालजी तिवारी ने उनका पालन-पोषण कड़े ब्राह्मणवादी नियमों के अनुसार किया। मूल शंकर ने आत्मज्ञान की तलाश में उन्नीस वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया। योग सिद्धांत एवं अभ्यास में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए सच्चे ज्ञानी तपस्वियों की तलाश में वे देश के विभिन्न भागों में घूमे। चौबीस वर्ष की आयु में वे संन्यासी बन गए और उन्हें दयानंद सरस्वती का नाम दिया गया।

वर्ष 1860 में, मथुरा में उनकी भेट संस्कृत के महान विद्वान स्वामी विरजानंद सरस्वती से हुई। स्वामी विरजानंद सरस्वती, दृष्टिबाधित थे, परंतु देश के भविष्य के लिए उनका दृष्टिदर्शन अत्यंत विराट था। दयानंद की शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात्, गुरु विरजानंद ने 'दक्षिणा' के रूप में अपने शिष्य से यह वचन लिया कि वे अपना संपूर्ण जीवन, समाज से अज्ञानता को मिटाने के लिए समर्पित करेंगे और वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतरत कार्यरत रहेंगे।

17वीं और 18वीं शताब्दी में, स्वामी दयानंद सरस्वती, भारतीय समाज में मार्गदर्शक के रूप में उभरे तथा महिलाओं और पुरुषों, निरक्षरों और साक्षरों, शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने विविध क्षेत्रों और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कार्य किया, परंतु वैदिक परंपरा के पुनरुत्थान में उनका योगदान सर्वोपरि है।

उन्होंने हिन्दू समाज से वेदों पर पुनः ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया। उस समय, जब पश्चिमी विद्वानों द्वारा वेदों की गलत व्याख्या की जा रही थी और वेदों को हमारी सभ्यता के प्राचीन अवशेष माना जा रहा था, तब स्वामी दयानंद ने वेदों की सटीक व्याख्या के लिए प्राचीन और मूल पद्धति को अपनाते हुए, वैदिक परंपरा की खूबियों को उजागर करने के लिए प्रयास किए, जिनका नैतिक पतन के उस दौर में पालन नहीं किया जा रहा था अथवा दुरुपयोग किया जा रहा था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उत्थान से बहुत पहले, स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा दृढ़ राष्ट्रवाद की नींव रखी गई। दयानंद सरस्वती द्वारा ही 'स्वराज' और 'स्वदेशी' जैसे शब्दों को सर्वप्रथम प्रयोग में लाया गया। स्वामी दयानंद एक सच्चे देशभक्त थे, जिनकी सोच अपने समय से बहुत आगे की थी।

सरदार पटेल ने दयानंद सरस्वती को महान क्रांतिकारी नेता और भारत के भाग्य निर्माता के रूप में वर्णित किया। देशभर में एक राष्ट्रभाषा की अवधारणा, स्वदेशी और राष्ट्रवाद की भावना, पंचायतों की स्थापना, दलितों के उत्थान, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता, देशभक्ति की भावना और स्वराज्य की घोषणा के प्रति उनका योगदान, राष्ट्र के लिए उनका अतुलनीय उपहार था।

भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे महान देशभक्त और अनेक स्वतंत्रता सेनानी, दयानंद सरस्वती जी की विचारधारा से अत्यंत प्रभावित थे और उनसे जुड़े थे। लाला लाजपत राय, दयानंद सरस्वती जी को अपना "धर्म पिता" और आर्य समाज को अपनी माता मानते थे। भगत सिंह के दादा, सरदार अर्जुन सिंह (जिन्होंने अपने सीने पर स्वामीजी की तस्वीर गुदवा रखी थी) ने भगत सिंह और उनके भाई जगत सिंह के यज्ञोपवीत (पवित्र धागा) संस्कार के दौरान, अपने दोनों पोतों को राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित करने का प्रण लिया था। लोकप्रिय देशभक्ति गीत "सरफरोशी की तमन्ना" के रचयिता राम प्रसाद बिस्मिल, जो खुशी-खुशी फांसी पर झूल गए थे, वे भी स्वामी जी के राष्ट्रवादी विचारों से अत्यंत प्रभावित थे। महान राष्ट्रवादी श्यामजी कृष्ण वर्मा, दयानंद सरस्वती के अनुयायी थे।

भारतीय स्व-शासन की प्रबल समर्थक और 'भारतीय होम रूल आन्दोलन' की संस्थापक, श्रीमती एनी बेसेंट ने कहा था कि 'दयानंद सरस्वती पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने यह नारा दिया था कि भारत, भारतवासियों के लिए है'। अस्पृश्यता के विरुद्ध दयानंद सरस्वती द्वारा स्पष्ट शब्दों में की गई घोषणा की महात्मा गांधी द्वारा अत्यंत सराहना की गई।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के कार्यों से प्रेरणा लेते हुए, आर्य समाज आंदोलन ने दलित वर्गों के उत्थान के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए और देशभर में कई दलितोद्धार सभाओं की स्थापना की।

स्वामी दयानंद सरस्वती, भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति को लेकर अत्यंत चिंतित थे। उन्होंने वैदिक शिक्षा का गहन अध्ययन किया और पाया कि वेदों में कहीं भी महिलाओं को हीन नहीं माना गया है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि वैदिक काल के दौरान, समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत सम्मानजनक थी। दयानंद सरस्वती द्वारा अपने मत का प्रचार-प्रसार किए जाने पर रूढ़िवादी लोगों द्वारा उनका प्रबल विरोध किया गया।

डाक विभाग, महान सामाजिक और राजनीतिक सुधारक तथा सच्चे देशभक्त दयानंद सरस्वती जी के जीवन और महान कार्यों को रेखांकित करते हुए, उन पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

### आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री अनुज जुड़

विवरणिका

विरूपण केशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग : 500 पैसे

Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 201600

Stamps Printed : 201600

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट

Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

Printer : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00